सुधा एम. राई की तीन कविताएँ

अनुवादक: सुवास दीपक

(1)

पुन: स्मरण

हर सुबह
खुलती है जब आँख
खिड़की खोलकर देखती हूँ

मंदिर के बुर्ज की परछाईं तले
याद करती हूँ
एक लोलुप, दरिद्र पुजारी
ऊँघ रहा एक कोने में
निकम्मा ईश्वर
अर्द्धमुदित नयन अंधेरे में

और मैं फिर याद करती हूँ
रात भर पति द्वारा भोग्या स्त्री को
खड़ी फूल–प्रसाद लिए मंदिर के सामने!

(2)

दुशवारियाँ

लौट आ
ओ, सपनों के मुसाफिर
मेरी साधना के निबिड़ अक्षरों को रौंदे बिना।

कितना कठिन है
हाशिए पर धकेल दिए व्यक्ति को
ऊँची उठती मन की दीवार से
तृष्णा की एड़ी उठाकर ताक–झाँक करना
और
जब दौड़ते हैं निरंकुश बेलगाम घोड़े
स्वाभिमानी छाती पर
तो अप्रभावित बन जिंदा रहना।

कितना कठिन है
मौत की काली गुफा में
जीवन के रंग पोतना।

और
मरुभूमि में
समय के अपने पदचिह्न तराशना

और कितना कठिन है
एक सच्चे कवि को
कविता में जिंदा रखना।

(3)
शब्द

कालजयी पाषाण की तरह
धड़ाम से गिरा
मेरी छाती पर
शब्द।

दर्द के आधार शिविर से
अक्षरों का आर्तनाद
मृत्यु के ही किनारे
छितरा गया।

एक शोक धुन बजती है
स्मृतियों की शवयात्रा...

अस्तित्व पीड़ा की हर पंक्ति में
अनुभूति और बिंबों की हथेलियों से
लगातार सहलाती रहती हूँ
शब्दरंजित
इस छाती को।

(**परिचय:** सुधा एम. राई भारतीय नेपाली कविता की सशक्त हस्ताक्षर हैं। इनकी कविताओं का नेपाली से हिंदी अनुवाद सिक्किम के चर्चित कथाकार एवं अनुवादक सुवास दीपक द्वारा किया गया है।)